ISSN : 3108-0294
Asha Paras Vahuvishyak Bhartiya Shodh-Patrika
(BI-ANNUAL PEER-REVIEWED, ONLINE RESEACH JOURNAL)
आशा पारस वहुविषयक भारतीय शोध-पत्रिका
(अर्द्धवार्षिक सहकर्मी-समीक्षित, ऑनलाइन शोध पत्रिका)
ISSN : 3108-0294
खंड-2, अंक-1, अप्रैल-सितंबर, 2026, apvbsp@gmail.com www.apvbsp.com

**आलेख**

# साहित्यकारों की दृष्टि में भारत

(प्राचीन काल से आजादी के अमृत महोत्सव तक)

**विनोद कुमार सिन्हा**
ग्राम+पो. बेलाही नीलकंठ,
वाया अथरी, जिला- सीतामढ़ी
पिन कोड- 843311 (बिहार)

प्राचीन काल में देवता लोग भी भारत की वन्दना करते थे तथा देवत्व छोड़कर मनुष्य-योनि में जन्म लेना चाहते थे-

**गायन्ति देवाः किल गीतकानि धन्यास्तु ते भारतभूमिभागे।**
**स्वर्गापवर्गास्पदमार्गभूते भवन्ति भूयः पुरुषाः सुरत्वात्॥**

*(विष्णु पुराण 2/3-24)*

विष्णु पुराण की रचना उत्तर भारत में हुई थी। दक्षिण भारत में श्रीमद्भागवत की रचना हुई थी उसमें भी वही भाव दर्शाया गया है। उसमें भी वर्णन आया है कि देवता भी भारतीय मानव के सौभाग्य पर ईर्ष्या करते हुए कहते हैं कि अहा! इन लोगों ने न जाने, कौन से ऐसे शुभ कर्म किए थे जिनके फलस्वरूप इन्हें भारत भूमि में जन्म लेने का अवसर मिलाः-

**अहो अमीषां किमकारिशोभनं प्रसन्न एषां स्विहुत स्वयं हरिः।**
**यैर्जन्म लब्धं नृषु भारताजिरे मुकुन्द सेवौपयिकं स्पृहा हिनः॥**

*(श्रीमद्भागवत् 51/9/21)*

इसी विशेषता के कारण राम, कृष्ण, गौतमबुद्ध आदि देवताओं को भी भारत की भूमि में अवतार लेना पड़ा। हमारे प्रथम राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त ने भी लिखा है कि भारत सभी देशों से महान था तथा यहाँ जाति, धर्म, वर्ग का भेद-भाव नहीं था। सबों में समता था तथा सबों का सम सम्मान थाः-

**भारत माता का मंदिर यह, समता का संवाद जहाँ**
**सबका शिव-कल्याण यहाँ है, पावे सभी प्रसाद यहाँ।**
**जाति, धर्म या संप्रदाय का, नहीं भेद व्यवधान यहाँ।**
**सबका स्वागत, सबका आदर, सबका सम सम्मान यहाँ॥**

*(पुस्तक-मंगल घट)*

ISSN : 3108-0294
Asha Paras Vahuvishyak Bhartiya Shodh-Patrika
(BI-ANNUAL PEER-REVIEWED, ONLINE RESEACH JOURNAL)
आशा पारस वहुविषयक भारतीय शोध-पत्रिका
(अर्द्धवार्षिक सहकर्मी-समीक्षित, ऑनलाइन शोध पत्रिका)
ISSN : 3108-0294
खंड-2, अंक-1, अप्रैल-सितंबर, 2026, apvbsp@gmail.com www.apvbsp.com

गौतम बुद्ध का प्रादुर्भाव 563 वर्ष ईसा पूर्व हुआ था। उन्हें किसी ने नास्तिक कहा, किसी ने देवतुल्य नास्तिक कहा तो अनेकों विद्वानों ने अवतारित देव कहा। गौतम बुद्ध ने ज्ञान और भक्ति से अधिक कर्म की प्रधानता दी। सैकड़ों वर्ष ईसा पूर्व से ईसा की छठी शताब्दी तक भारत चिंतन, दर्शन, ज्ञान-विज्ञान, गणित आदि क्षेत्रों में विश्व का गुरू बना रहा छठी शताब्दी के बाद लगभग उन्नीसवी शताब्दी तक भारत में कोई चमत्कार पूर्ण कार्य नहीं हो सका जिससे हम विश्व-गुरू बन सकें। इस कार्य काल में कुछ ऐसे विद्वान अवश्य हुए जो पुनः विश्व को भारत के प्रति सोचने को मजबूर करते रहे-आकर्षित करते रहे। इसके कई कारण थे। कुछ लोगों ने कर्मकांड को जातिगत पेशा बना दी- जिसके फलस्वरूप समाज में अंधविश्वास, जातीयता, संप्रदायवाद, भेद-भाव, वर्ग भेद, छूआछूत आदि कुरीतियाँ पनपने लगीं। एक ही धर्म में लोग विखंडित होते गए। ऐसी स्थिति में धार्मिक बौद्धिक और आर्थिक हास होना स्वाभाविक था।

मक्के में हजरत मुहम्मद साहब का जन्म 570 ईस्वी में हुआ। 622 ईस्वी में वे मक्का छोड़कर मदीना पहुँच गये और उसी समय इस्लाम धर्म का प्रचार आरंभ हुआ। सात सौ ईस्वी तक इस्लाम इराक, ईरान, मध्य एशिया में फैल गया सिन्ध में भी इस्लाम फैल गया। इस्लाम धर्म का आरंभ धर्म के प्रचारक के रूप में हुआ परन्तु बाद में उसका रूप राजनीति से जुड़ गया। भारत में इस्लाम का आगमन मित्रता के रूप में हुआ था। अरब, फिलस्तीन और मिस्र का भारत से प्राचीनतम व्यापारिक संबंध था। तुर्क भी मुसलमान होने लगे। भारत में मुगलवंश की नींव डालने वाला बाबर भी मंगोल जाति का था।

हिन्दू-मुस्लिम एकता कब समाप्त हुई इसके संबंध में राष्ट्रकवि दिनकर ने लिखा है: "इस्लाम से हिन्दुओं की भयंकर घृणा तब आरंभ हुई, जब महमूद गजनवी ने इस देश में आकर क्रूरता बरती और यहाँ के मंदिरों को विनष्ट 'करके अपने लिए दुर्नाम अर्जित किया। किन्तु महमूद गजनवी या मुहम्मद गोरी, ये लोग अरबी या ईरानी नस्ल के नहीं थे, न इतिहास में सच्चे इस्लाम का प्रतिनिधित्व ही किया है।" (पुस्तक- संस्कृत के चार अध्याय, पृ. 206)

मुसलमानी आक्रमण के बाद भारत पहली बार पराधीन हुआ। पृथ्वीराज चौहान की पराजय 1192 में हुई। उसी साल मुहम्मद गोरी का दिल्ली पर राज हो गया। मुसलमान शासक हिन्दुओं को गुलाम समझने लगे। सभी गैर-मुस्लिम जनता चाहे वे हिन्दू हों या ईसाई या यहूदी सबों के साथ शत्रु ऐसा व्यवहार किया जाता था।

परन्तु उस समय भी कुछ ऐसे विद्वान साहित्यकार आए जो भारत में पथ-प्रदर्शक साबित हुए। इस्लामी राज्य के 61 वर्ष बाद पटियाला में अमीर खुसरों का जन्म हुआ। ये तुर्क थे। सुलतान नासिरूद्दीन के राज्यकाल में इनके पिता भारत आए थे। अमीर खुसरों शेख निजामुद्दीन औलिया के शिष्य थे। इन्होंने प्राचीन भारत की गौरव को याद किया तथा भारत को पृथ्वी का स्वर्ग माना। खुसरों ने अपनी रचना में अभिनव प्रयोग किया। वे फारसी छन्द का एक टुकड़ा फारसी में और दूसरा ब्रजभाषा में रचते थे। वे हिन्दुओं की धर्मप्रियता की प्रशंसा कर भेद-भाव मिटाना चाहते थे। शेरशाह के समय में सूफी कवि मलिक मुहम्मद जायसी आए जो हिन्दू और मुसलमान दोनों को प्रेम के रंग में रंगना

चाहते थे। वे दोनों को अपनी कट्टरता छोड़कर आत्मा के धर्म में दीक्षित कर प्रेम की पीर जगाना चाहते थे। इसका प्रतिफल हुआ कि दोनों कौमों के बीच एकता का आदर्श प्रस्फुटित होने लगा। 1399 ई. में कबीर का जन्म हुआ। वे बहुत बड़े क्रांतिकारी कवि थे उन्होंने हिन्दुओं और मुसलमानों को यह कहकर फटकारने लगे कि तुम दोनों का धर्म पाखंड है, अधूरा है और अपूर्ण है। वे मानव धर्म के बहुत बड़े पुजारी थे। उन्होंने वदाः-

**हिन्दू कहते है राम हमारा, मुसलमान रहमाना,**
**आपस में दोउ लड़े मरत है, भेद न कोई जाना।**

हिन्दू-मुस्लिम के बीच के विद्वेष को समाप्त करने के लिए कबीर ने दो उपायों को अपना धर्म माना एक दोनों के बाह्याचार और पाखंड को समाप्त करना और दूसरा मनुष्य के भीतर के अद्वैतवाद को उजागर करना। इसीलिए उन्होंने अपना परिचय भी दिया है- 'ना मैं हिन्दू ना मुसलमान' फिर "पंडित मुल्ला जो लिख दीया- छोड़ि चलै हम कछु न लीया।" कबीर का परमात्मा ललकारते हुए कहता है कि मैं न मंदिर में हूँ न मस्जिद में "मोकों कहाँ ढूंढे बन्दे मैं तो तेरे पास में"; मैं तो तुम्हारी आत्मा में हूँ- 'ना मैं देवल ना मैं मस्जिद, न काबे, कैलास में।'

कबीर की परंपरा में नानक, रविदास, धन्ना, दादूदयाल, मलूकदास आदि कई संत आए जो सभी अनुसूचित जाति या पिछड़े वर्ग के थे- सर्वो ने मानव-धर्म को सर्वोपरि माना।

अकबर के दरबार में खानखाना रहीम रहते थे। उन्हें फारसी, संस्कृत, हिन्दी तीनों का ज्ञान था। अमीर खुसरों की तरह उन्होंने भाषा का एक नवीन प्रयोग किया। वे ज्योतिष के भी ज्ञाता थे। ज्योतिष शास्त्र की एक पुस्तक 'खेट-कौतुक जातकर्म' में उन्होंने संस्कृत-फारसी और हिन्दी-तीनों भाषाओं का प्रयोग किया थाः-

**यदा मुश्तरी कर्कटे वा कमाने,**
**यदा चश्मखोरा जमीवासमाने,**
**तथा ज्योतिषी क्या कहै, क्या पढ़ेगा ?**
**हुआ बालका बादशाही करेगा।**

(जिसकी जन्म-पत्री में धनु अथवा कर्क के वृहस्पति दसवें स्थान में हो तो ज्योतिषी क्या लिखे पढ़ेगा? क्योंकि यह लड़का बादशाही करेगा)

राहुल सांस्कृत्यायन जी ने तो प्रथम मुसलमान कवि रहीम को ही माना है। रामचरित मानस के रचनाकार तुलसीदास भी उसी समय में हुए। तुलसीदास का जन्म 1532 ईस्वी में हुआ और कवि रहीम का जन्म 1558 ईस्वी में हुआ था। तुलसी दास रहीम से बड़े थे परन्तु दोनों में मित्रता थी। तुलसीदास का सम्मान दोनों धर्मो के लोग करते थे। 1579 में 'ह्यमस स्टीफेंस' नामक एक अंग्रेज ईसाइयत का प्रचार करने पहले-पहल गोआ आया था और 40 वर्षों तक ईसाई धर्म का प्रचार करता रहा। फिर अकबर के दरबार में महारानी एलिजावेथ का पत्र लेकर 3 अंग्रेज आया 1600 में ईस्ट इंडिया कंपनी की स्थापना हुई। 1608 में जहाँगीर ने सूरत में तंबाकू की कोठी खोलने की अनुमति दी। इस तरह

ISSN : 3108-0294
Asha Paras Vahuvishyak Bhartiya Shodh-Patrika
(BI-ANNUAL PEER-REVIEWED, ONLINE RESEACH JOURNAL)
आशा पारस वहुविषयक भारतीय शोध-पत्रिका
(अर्द्धवार्षिक सहकर्मी-समीक्षित, ऑनलाइन शोध पत्रिका)
खंड-2, अंक-1, अप्रैल-सितंबर, 2026, apvbsp@gmail.com www.apvbsp.com

पहले धर्म-प्रचार फिर व्यापार-फिर भारत का राज्य। 1757 ईस्वी में पलासी के मैदान में अंग्रेजों को विजय मिली। पहले व्यापारिक दृष्टि से अंग्रेजों ने कलकत्ता को राजधानी बनाया। 1912 में देश की राजधानी दिल्ली बन गई। अंग्रेजों की दमन-नीति कठोर बन गई। जालियांवाला बाग कांड उसी का उदाहरण है। हजारों वर्ष की गुलामी के बाद जब भारत की संपत्ति, विद्या, बुद्धि कीर्त्ति का अवमूल्यन होने लगा तो राष्ट्रकवि श्री मैथिलीशरण गुप्त की आत्मा छटपटाने लगी। उन्होंने लिखाः-

**भारत ! कहो तो आज तुम क्या हो वही भारत अहो !**
**हे पुण्यभूमि ! कहाँ गयी है वह तुम्हारी श्री कहो ?**
**अब कमल क्या, जल तक नहीं है, सर मध्य केवल पंक है।**
**यह राज राजकुबेर अब हा ? रंक का भी रंक है।**

*(पुस्तक-भारत-भारती-वर्तमान खंड)*

साहित्यकार निराश भले हो गए दुर्दशा देखकर पीड़ित भले हो जाए वह धैर्य और विश्वास नहीं खोता गुप्त जी को विश्वास था कि गुलामी की जंजीर टूटेगी और भारत पुनः गौरवपूर्ण प्राचीन भारत बन जाएगा-

**सौ निराशाएँ रहें, विश्वास यह दृढ़ मूल है,**
**इस आत्म-लीलाभूमि को, वह विभु न सकता भूल है।**
**अनुकूल अवसर पर दयामय, फिर दया दिखलायेंगे,**
**वे दिन यहाँ फिर आयेंगे, फिर आयेंगे, फिर आयेंगे।**

*(पुस्तक-भारत-भारती पृ. 164)*

अंग्रेजों की तड़प नीति के विरोध में भारत में संगठित होकर 1857 में स्वाधीनता की पहली लड़ाई लड़ी गई। वह राष्ट्रीयता का प्रथम उन्मेष था परन्तु सफल नहीं हो सका। भारत की बागडोर ईस्ट इंडिया कंपनी के हाथ से ब्रिटिश पार्लियामेन्ट के हाथ में चली गई और अंग्रेज राज्य स्थापित हो गया।

1928 में निराला जी ने भी भारत की स्तुति करते हुए हुंकार भरा थाः-

**भारति जय-विजय करे, कनक-शस्त्र-कमल धरे।**
**लंका पदतल-शतदल, गर्जितोर्मि सागर जल**
**धोता शुचि चरण युगल, स्तव कर बहु अर्थ भरे ।।**

*(पुस्तक-मातृ-भूमि-कविता-भारत वंदना)*

अंग्रेजो ने 'फूट डालो और राज करो' की नीति अपनाई हिन्दू मुस्लिम का फूट, जमींदार-किसान का फूट अगड़े-पिछड़े का फूट, ब्राह्मण-गैर ब्राह्मण का फूट, किसान-मजदूर का फूट आदि।

ISSN : 3108-0294
Asha Paras Vahuvishyak Bhartiya Shodh-Patrika
(BI-ANNUAL PEER-REVIEWED, ONLINE RESEACH JOURNAL)
आशा पारस वहुविषयक भारतीय शोध-पत्रिका
(अर्द्धवार्षिक सहकर्मी-समीक्षित, ऑनलाइन शोध पत्रिका)
ISSN : 3108-0294
खंड-2, अंक-1, अप्रैल-सितंबर, 2026, apvbsp@gmail.com www.apvbsp.com

1885 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना हुई। फिर 1913 में 'हिन्दुस्तानी एसोसिएशन' नामक संस्था स्थापित हुई। अंग्रेजों ने पंजाब, महाराष्ट्र, बिहार में जुल्म करना प्रारंभ किया। चंपारण सत्याग्रह एवं आंदोलन के बाद अंग्रेजों में हताशा हुई। हमारे देशभक्त नेताओं का बलिदान जब प्रारंभ हुआ तो 'भारतीय आत्मा' के नाम से विख्यात कवि पं. माखन लाल चतुर्वेदी ने लिखाः-

**मुझे तोड़ लेना वनमाली, उस पथ पर तुम देना फेंक।**
**मातृभूमि पर शीश चढ़ाने जिस पथ पर जावे वीर अनेक ।**

उसी भावों को राष्ट्रकवि 'दिनकर' ने अपनी ओज पूर्ण भाषा में कही:-

**"कलम, आज उनकी जय बोल**
**जला अस्थियाँ बारी-बारी**
**छिटकाई जिसने चिनगारी**
**जो चढ़ गए पुण्य-वेदी पर**
**बिना गरदन का लिए मोल**
**कलम आज उनकी जय बोल।"**

वह दिन भी आया जब हमारे देश ने गुलामी की बेड़ियाँ तोड़ दी। पराधीन भारत में स्वाधीनता लाने का नेतृत्व सत्य और अहिंसा के पुजारी महात्मा गाँधी ने किया। परन्तु सरदार भगत सिंह, तिलक, गोखले, सुभाष चन्द्र बोस, वीर सावरकर, लाला लाजपत राय, गुरू गोविन्द सिंह आदि सैकड़ों के बलिदान को हम भूल नहीं सकते।

इतना ही नहीं- आजादी के आंदोलन में हजारों गुमनाम लोग शहीद हो गए जिसकी चर्चा इतिहास के पन्नों में भी नहीं हो सकी।
हमारे सपने पूर्णतः साकार नहीं हो सके। इस संबंध में उच्च शिक्षा और शोध संस्थान के प्रो. प्रदीप के शर्मा के निबंध का एक अंश द्रष्टव्य है:-

"सुभाष चन्द्र बोस के दबाव में गांधी जी ने स्वराज्य को कांग्रेस का लक्ष्य दिसम्बर 1929 में स्वीकार तो किया, किंतु जब देश की आजादी का वक्त आया तो उन्होंने पूर्ण स्वराज्य के स्थान पर अंग्रेजी ताज के अंतर्गत आधी आजादी (डोमीनियन स्टेट्स) स्वीकार लिया। अपना अरबों-खरबों का निवेश भारत से निकालने के बाद ही अंग्रेजों ने भारत को 26 जनवरी 1950 को पूर्ण स्वराज दिया।"

(प्रकाशित लेख 'राष्ट्रवाद और भाषाई अस्तित्व' भाषा द्वैमासिक) सितम्बर-अक्टूबर 2020 'भारत माता' का अंग विखंडित हो गया- पूर्व और पश्चिम के दो अंगों को काटकर पाकिस्तान बना दिया गया। यह भी अंग्रेजों की चाल थी 'फूट डालो' नीति सफल हो गई जिसमें कुछ नेताओं का मौन भी आग में घी डालने लगा। पाकिस्तान को भारत से

ISSN : 3108-0294
Asha Paras Vahuvishyak Bhartiya Shodh-Patrika
(BI-ANNUAL PEER-REVIEWED, ONLINE RESEACH JOURNAL)
आशा पारस वहुविषयक भारतीय शोध-पत्रिका
(अर्द्धवार्षिक सहकर्मी-समीक्षित, ऑनलाइन शोध पत्रिका)
खंड-2, अंक-1, अप्रैल-सितंबर, 2026, apvbsp@gmail.com www.apvbsp.com

अलग करने का दोष केवल अंग्रेजों तया कुछ नेताओं का ही नहीं है। हमारी ना समझी तथा धर्मान्धता का पाखंड भी इसका जिम्मेवार है।

शैली सम्राट राजा राधिकारमण प्र. सिंह ने भी लिखा है-

**"पाकिस्तान का बीज किसने बोया? मुगल-राज्य की तलवार ने ?**
**या हमारे जाने माने पंडितों के अनाचार ने बहिष्कार ने ?**

पाकिस्तान के लिए जिम्मेवार कौन है? हमारी जाति-पांती, छुआ-छूत और बहिष्कार की नीति नहीं? अपनी आँख की किरकिरी नहीं देखती, उठे हैं दूसरे की आँख की फूली देखने। तलवार के हाथों इस्लाम का गर्म प्रचार जैसा हुआ जितना, उससे कई गुना अधिक हमारी तंगनजरी के बहिष्कार के हाथों हुआ। *(पुस्तक- तब और अब पृ. 20)*

आधी-अधूरी ही सही हमें आजादी मिली संपूर्ण राष्ट्र आशान्वित था कि रामराज्य आएगा। परन्तु जाति और धर्म का पाखंड इतना प्रज्वलित हो उठा जो महात्मा गाँधी की हत्या हो गई। राष्ट्र पुनः शोकाकुल हो उठा।

आजादी के साल भर बाद ही राष्ट्र कवि दिनकर ने राष्ट्र को सचेत किया था कि आजादी के गर्व से गर्वित मत बनोः-

**"हाँ खूब मनाओ आजादी की वर्षगांठ,**
**पर नहीं इस खुशी में कि साल भर हुआ उसे,**
**इसलिए कि वह अबतक तुमसे छिनी नहीं।"**

साहित्यकार राष्ट्रीय चेतना का पुजारी होता है। दिनकर जी को जब लगा कि राजधानी से चली सरकारी योजनाएँ गांव के अंतिम व्यक्ति तक नहीं पहुँचती है तब उन्होंने दिल्ली से पूछाः-

'अँटका कहाँ स्वराज ? बोल दिल्ली तू क्या कहती हो' आजादी आने पर भ्रष्टाचारियों को भी आजादी मिलने लगी तब फिर उन्होंने कहा:-

**'आजादी आई नहीं, विकट कुहराम मचा।**
**है मधी हुई अच्छे-अच्छे में मारपीट।**
**कहते हैं जो ये साधु सरीखे पाक-साफ**
**डुबकियाँ लगा वे भी अब पानी पीते हैं।'**

अधूरे सपने को देखकर गजलकार दुष्यन्त ने भी कहाः-

**"इस कदर पाबंदी ए मजहब कि सदके आपके,**
**जब से आजादी मिली है, मुल्क में रमजान है।**
**मैं कल नुमाइश में मिला वो चीथड़े पहने हुए**
**मैंने पूछा नाम तो बोला कि हिन्दुस्तान है।**
**मुझसे रहते हैं करोड़ों लोग, चुप कैसे रहूँ?**

ISSN : 3108-0294
Asha Paras Vahuvishyak Bhartiya Shodh-Patrika
(BI-ANNUAL PEER-REVIEWED, ONLINE RESEACH JOURNAL)
आशा पारस वहुविषयक भारतीय शोध-पत्रिका
(अर्द्धवार्षिक सहकर्मी-समीक्षित, ऑनलाइन शोध पत्रिका)
ISSN : 3108-0294
खंड-2, अंक-1, अप्रैल-सितंबर, 2026, apvbsp@gmail.com www.apvbsp.com

**हर गजल अब सल्तनत के नाम एक बयान है।"**

आजादी मिलने के मात्र एक 'दशक बाद राजा राधिका रमण प्रसाद सिंह ने भी अपनी अनूठी शैली में लिखा थाः- "जाहिर है राजनीति छाई है हर की नजर पर आज। राजनीति की आरती घर-घर चल रही है। नीति विलख रही है- राजनीति दमक रही है- चमक रही है इर्द-गिर्द। लगता है राजनीति तो नीति को चुनौती दे रही हैं ....। उतर रही है शराफत की नकाब। अब लो वह खोटा सिक्का होकर रह गई चलो, हटो, तेरी न कहीं पूछ होगी न पैठ। लीजिए आज राजनीति ही भानुमती की पिटारी रही गई। राजनीति की एक हथेली पर सत्ता है तो दूसरी पर सोना भी। जवान पर सदाचार-निर्माण और सेवा का सुर-ताल चाहे जो कुलेल करे।" (पुस्तक-तब और अब पृ. 249)

हमारे देश का सिद्धांत रहा है कि विश्व में हर देशों के प्रति मेरा मित्रवत् संबंध रहा पड़ोसियों को तो हम भाई मानते थे और अभी भी मान रहे हैं। हमारे प्रथम प्रधानमंत्री नेहरूजी ने जिस पड़ोसी के साथ 'पंचशील' समझौता किया अपना भाई माना उसी ने आजादी के मात्र डेढ़ दशक बाद 1962 में विश्वासघात कर हम पर हमला कर दिया। उसे प्यार में समझाया गया परन्तु वह प्यार भाषा समझने के लिए भी जब तैयार नहीं हुआ तब कविवर गोपाल सिंह नेपाली ने ललकार कर कहा-

**भूला है पड़ोसी तो उसे प्यार से कह दो।**
**लम्पट है, लुटेरा है, तो ललकार के कह दो।।**
**जो मुँह से कहा है, वही तलवार से कह दो।**
**आए न कोई लूटने, भारत को दुबारा ।।**

उसी समय राष्ट्रकवि दिनकर ने परशुराम का आह्वान किया-

**मुख में वेद, पीठ पर तरकश, कर में कठिन कुठार।**
**सावधान ! ले रहा परशुधर फिर नवीन अवतार ।।**

इतना ही नहीं उन्होंने कहा-

**नहीं चाहता युद्ध लड़ाई, लेकिन गर ठनेगी,**
**किसी तरह भी शांतिवाद से मेरी नहीं बनेगी।**

*(कोयला और कवित्व- पृ. 43)*

हमारी मानवता जब असुरक्षित रहने लगी तो कविवर आरसी प्रसाद सिंह को भी कहना पड़ा-

**व्यक्ति का स्वातंत्र्य जब अज्ञान-मूर्च्छित है।**
**ढोंग है गणतंत्र, मानवता अरक्षित है।।**

हमारी स्वाधीनता जैसे तैसे व्यस्का होने लगी- अपराधियों का भी राजनीतिकरण होने लगा। कई तरह के घोटाले होने लगे और राजनीतिक अपराधी निर्लज्जता पूर्वक कहने लगे कि कोई भी व्यक्ति तब तक अपराधी नहीं होता जब तक सर्वोच्च न्यायालय उसे अपराधी न मान ले। तब न पं. राम दयाल पांडेय ने 'न्याय' को भी चुनौती देते हुए कहा:-

**न्याय और अन्याय हो गए शब्दकोष में सीमित,**
**गोली, वोट लूट में भी न्याय हो गया केन्द्रित ।**
**जो सत्ता में रहे, न्याय उसकी कथनी में रहता।**
**सत्ता से वंचित जन को रहना ही होगा कुंठित।।**

*(पुस्तक - राष्ट्रव्यंजना पृ. 135)*

साहित्यकार प्रारंभ से आज तक अन्याय देख नहीं सकता। बड़ी छटपटाहट के साथ कवि नीरज को भी कहना पड़ाः-

**सुन्दरता की लाश सड़ेगी सड़कों पर,**
**साहित्य पड़ा महलों में कैसे सोयेगा ?**

दुर्भाग्यवश कुछ साहित्यकार भी चाटुकार बन गए। किसी ने आपातकाल का गुणगान किया। किसी ने भ्रष्ट नेताओं के समर्थन में चालीसा तथा अभिनन्दन ग्रंथ लिखा। परन्तु आपात काल में लोकनायक जयप्रकाश तथा सैकड़ों नेताओं के साथ लोककवि नागार्जुन को भी जेल जाना पड़ा तो उन्होंने विश्व में सफलतम प्रधानमंत्रियों में एक मानी जाने वाली श्रीमती इन्दिरा गांधी को भी ललकाराः-

**इंदु जी, इंदु जी/क्या हुआ आपको**
**सत्ता के मद में/भूल गई बाप को।**

लोकनायक जयप्रकाश इन्दिरा जी को पुत्री कहकर ही संबोधित करते थे। लोक कवि नागार्जुन ने स्वाधीनता की स्वर्ण जयन्ती वर्ष 1972 को लौह-जयंती कहा महीयसी महादेवी वर्मा ने 1986 में एक भाषण में कहा थाः-
आजादी के बाद संघर्ष करने वालों में से कुछ सत्ता में चले गये और कुछ लिखने में ही लगे रहे। राजनीति में जाने वाले लोग लिखने वाले लोगों से वंदना को अपेक्षा करने लगे। यह खाई बढ़ती गई और स्थिति यह हो गई कि कुछ लोग और कुछ नहीं करते; केवल वंदना ही करते हैं। (प्रकाशित - साप्ताहिक हिन्दुस्तान अंक-25-31 अक्टूबर 1987)

लोकनायक जयप्रकाश ने देश में दूसरी आजादी लाई। उन्होंने सचेत किया कि सरकार बदलने से कुछ नहीं होगा- व्यवस्था बदलो । परन्तु सत्ता लोलुप नेताओं ने उनकी नहीं सुनी व्यवस्था नहीं बदली-भ्रष्टाचार गहनतम होता गया।

भारत की पैसठवीं स्वाधीनता से कुछ ही दिन पूर्व भारत के 13वें राष्ट्रपति के रूप में महामहिम श्री प्रणव मुखर्जी ने शपथ ग्रहण के अवसर पर जो पंक्तियाँ कही वह साहित्यकारों सहित संपूर्ण देश के लिए चिन्तनीय है। उन्होंने कहा- "भ्रष्टाचार ऐसी बुराई है, जो देश की मनोदशा में निराशा भर सकती है और इसकी प्रगति को बाधित कर सकती है।"

ISSN : 3108-0294
Asha Paras Vahuvishyak Bhartiya Shodh-Patrika
(BI-ANNUAL PEER-REVIEWED, ONLINE RESEACH JOURNAL)
आशा पारस वहुविषयक भारतीय शोध-पत्रिका
(अर्द्धवार्षिक सहकर्मी-समीक्षित, ऑनलाइन शोध पत्रिका)
खंड-2, अंक-1, अप्रैल-सितंबर, 2026, apvbsp@gmail.com www.apvbsp.com

दुर्भाग्य है कि भ्रष्टाचार अब शिक्षण संस्थाओं में भी पसर रहा है- कहीं परीक्षा फल बिकते हैं- कहीं विश्वविद्यालय के परीक्षा-नियंत्रक पर तो कही कुलपतियों पर भ्रष्टाचार की मुहर लग रही है। इस भ्रष्टाचार से साहित्यकार भी छटपटा रहा है। एक दशक पूर्व 2011 में किताब घर प्रकाशन से एक पुस्तक छपी- 'भ्रष्टाचार : समाज में छटपटाहट'। इस निबंध संग्रह के संपादक है श्री विजय किशोर मानव। इस पुस्तक का दो अंश विचारणीय है जो मैं उद्धृत करना चाहता हूँ:-

"जो भ्रष्टाचार गाँधीवादी राजनेताओं के नेपथ्य में चले जाने पर उभरा वह 1991 की उदारीकरण की नीति के बाद और तेजी से पनपा। (लेख- अपने से शुरूआत करने में कोई हर्ज नहीं ले. डॉ. अलका प्रकाश पृ. 1063)

"1991 से लेकर 1998 तक के भ्रष्टाचारों में सिक्यूरिटी स्कैन, जैन हवालाकांड, बिहार चारा घोटाला भंसाली प्रकरण, आई.टी. सी. का विदेशी मुद्रा उल्लंघन, यूनिट ट्रस्ट स्कैन, तेलगी नकली स्टैंप काड सब अखबारों की सुर्खियों में कुछ दिन रहे। भूतपूर्व प्रधानमंत्री वी.पी. सिंह के पुत्र अजय सिंह के नाम सेंट किट्स खातों में 21 मिलियन डॉलर का खाता खुलना, क्या कोई रोमांचकारी जासूसी उपन्यास का एक पृष्ठ था।" (लेख- बदलती प्रकृति और बुनियादी अंतर्वियच लेखक-हरिकृष्ण निगम- पृ. 8)

असल में राजनीति से सत्ता प्राप्त होती है- फिर सत्ता से संपत्ति आती है। फिर सत्ता और संपत्ति पाकर व्यक्ति मदांध तथा विवेकशून्य हो जाता है।

आज से लगभग 5-6 दशक पूर्व विहार के एक मंत्री हुआ करते थे श्री विद्याकर कवि। जीवन के अंतिम पड़ाव में अस्वस्थ हो गए- पटना हॉस्पीटल में भर्ती थे। मैं उन्हें देखने अपने विद्यायक महंथ विवेकानन्द गिरि के साथ चला गया था। मैंने उनसे अपना राजनीतिक अनुभव सुनाने को कहा। महात्मा भीष्म की तरह मृत्यु शय्या पर पड़े विद्याकर कवि ने कहाः-

"पहले के नेता 'जन हित' का कार्य करते थे और अप्रत्यक्ष रूप में उनको निज हित' हो जाता था- अव के नेता निज-हित' का कार्य करते हैं और अप्रत्यक्ष रूप में 'जन हित' हो जाता है।"
यह राजनीति का कटु सत्य है जो 5 दशक से चला आ रहा है। अब तो गाँव के एक छोटे वार्ड सदस्य से मंत्री तक भी उस 'कटु-सत्य' में विलीन हो गए हैं।

स्वराज्य का एहसास गांव के अंतिम व्यक्ति तक हो- यह सपना महात्मा गांधी, विनोबा भावे, लोक नायक जयप्रकाश, राजेन्द्र बाबू, प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री, वाजपेयी जी आदि नेताओं का था परन्तु वह अपूर्ण ही रहा। सौभाग्यवश यह सपना हमारे वर्तमान प्रधानमंत्री मोदी जी का भी है। परन्तु वह अकेले इसे पूर्ण कैसे करेंगे- उन्हें जन-सहयोग चाहिए। जन-आंदोलन, नैतिकता और विवेक की शिक्षा ही जन-सहयोग होगा। विश्वास तो डगमगा रहा है परन्तु 'जावेद अख्तर' की पंक्तियों में:-

**दिल नाउम्मीद तो नहीं, नाकाम ही तो है।**

**बाकी है अब भी शाम, मगर शाम ही तो है।**

नेता चुनाव से पहले दसों उंगलियों जोड़े रहते हैं और जीतने के बाद अंगूठा दिखाने लगते हैं। इस चुनावी राजनीति का श्री केदारनाथ अग्रवाल ने बड़ा अच्छा चित्रण किया है:-

"चुनाव से पहले/आम आदमी रहा वह पाँव-पाँव चलने का आदी रहा वह अब/हर साल चुनाव के बाद जीत की कुरसी हुआ वह आम आदमी के बजाए चौपाया हुआ वह" (पुस्तक अपूर्वा)

भारत ऐसे लोकतंत्र का नायक कैसा हो? इसकी चर्चा भी आधुनिक कवि डॉ. रमेश तिवारी ने की है:-

**"अखिल विश्व में वह विशालतम लोकतंत्र कहलाता है।**
**उसका नायक कहीं लोक को पलभर कभी भुलाता है।**
**वह असहाय जनों में अद्भुत सत्साहस भर देता है,**
**सबसे पीछे बड़े व्यक्ति की वाणी को स्वर देता है।**

(पुस्तक- युवाओं के गीत पृ. 65)

भारत में एक समय ऐसा भी आया अब 'बाबरी मस्जिद' को केन्द्र में रखकर सांप्रदायिकता नंगा नाचने लगी। हिन्दू-मुसलिम एक दूसरे का दुश्मन बन गए। धार्मिक पाखंड को धर्मयुद्ध की संज्ञा दी जाने लगी। सरहद पर बच्चों को तालीम के बदले युद्ध की शिक्षा दी जाने लगी। तब एक मुस्लिम कवि 'तारिक असलम' तस्लीम ने लिखाः-

"ये कैसी शहादत/कि मासूम बच्चों को पहनाई जा रही गले खोलने में कारतूस की मालाएँ। हम पर उतारू है। उनके दिलो-दिमाग में नफरत की पाठशालाएँ। सच तो यह है कि कुरआनी आयतें हों या कोई नवी/या पैंगबर/किसी ने नहीं दिया। कभी ऐसा कोई आदेश/अपने अनुयायियों को कि/इंसानी लाशों से पाट दो गलियों/ सड़कें, झील, तालाब और नदी। समंदर।

(कविता- 'यह जिहाद नहीं' प्रकाशित भाषा-मई-जून 2018) महात्मा गांधी के 'तीन बंदर' की रहस्य कथा से तो हम भारतीय परिचित हैं। 2020 में जब संपूर्ण भारत गाँधीजी की 150वीं जयन्ती धूमधाम से मना रहा था तब अपना ही कवि जो अब मारिशस का व्यंगकार कवि बन गया है जी हाँ कवि 'राज हीरामन' का व्यंग्य भी कटु सत्य लिखता हैः-

**बापू, चौथे बंदर को लाना होगा,**
**जो अंधे को चश्मा दे। बहरे को कान दे/गूंगे को वाणी दे**
**फिर उनके हाथ में लाठी,**
**क्योंकि कुत्ते/अब मुँह चाटने लगे हैं।"**

(लेख- महात्मा गाँधी और मॉरिशस लेखिका-नूतन पांडेय प्रकाशित आजकल-अक्टूबर 2021, पृ. 16)

ISSN : 3108-0294
Asha Paras Vahuvishyak Bhartiya Shodh-Patrika
(BI-ANNUAL PEER-REVIEWED, ONLINE RESEACH JOURNAL)
आशा पारस वहुविषयक भारतीय शोध-पत्रिका
(अर्द्धवार्षिक सहकर्मी-समीक्षित, ऑनलाइन शोध पत्रिका)
ISSN : 3108-0294
खंड-2, अंक-1, अप्रैल-सितंबर, 2026, apvbsp@gmail.com www.apvbsp.com

हमारे देश भारत के लिए यह गौरव की बात है कि हम भारतवासी विद्वान, दार्शनिक सह चिंतक प्रधानमंत्री मोदी जी के प्रस्ताव पर 15 अगस्त 2021 से 15 अगस्त 2022 तक आजादी का 75वां वर्षगांठ अर्थात् अमृत महोत्सव मना चुके हैं।

इस तरह साहित्यकार प्राचीन भारत से लेकर आजादी के अमृत महोत्सव तक महाभारत काल के 'बर्बरीक' के रूप में न्याय-अन्याय, स्थिति, परिवेश, उन्नति-अवनति, उत्थान-पतन सब देख रहा है और समस्त नेताओं तथा देशवासियों को भी सचेत कर रहा है। यही साहित्यकार का राष्ट्र के प्रति कर्तव्य और धर्म होता है। जब-जब राष्ट्र अँधेरे में रहा है- साहित्यकार ने उसे मशाल दिखाने का कार्य किया है।

मैं इस निबंध का अंत सुश्री ममता किरण के ताजी गजल से कर रहा हूँ:-

**कटेगी रात, सहर आएगी फिर से**
**पलट के आएगी इक रोज खुशी फिर से।**

(पुस्तक- 'आँगन का शजर' प्रकाशक- 'किताब घर प्रकाशन')